कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

MSK–005

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2024

एम.एस.के.–005 : वैदिक वाङ्मय एवं भारतीय संस्कृति और सभ्यता

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) सभी प्रश्न **अनिवार्य** हैं।*

(ii) प्रश्न-पत्र में तीन खण्ड हैं।

(iii) प्रत्येक खण्ड में दिए गए निर्देशानुसार ही उत्तर दीजिए।

खण्ड—क

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×10=50

(क) वेद के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए वेदों के काल-निर्धारण का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

(ख) उपनिषदों के महत्व का वर्णन करते हुए प्रमुख उपनषिदों पर प्रकाश डालिए।

(ग) वैदिककालीन सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक जीवन पर प्रकाश डालिए।

(घ) सोमयाग के माहात्म्य का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

(ङ) आरण्यक का परिचय देते हुए ऋग्वेद के आरण्यक का प्रतिपाद्य लिखिए।

(च) 'ब्रह्मण' शब्द से क्या अभिप्राय है ? उनके देशकाल का परिचय प्रस्तुत कीजिए।

(छ) यज्ञ के तात्पर्य को स्पष्ट करते हुए प्रमुख विभागों का विस्तापूर्वक वर्णन कीजिए।

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** मन्त्रों की व्याख्या कीजिए : 2×5=10

(क) सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात।

स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

(ख) अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात्।

इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि॥

(ग) कामस्तदग्र समवर्ततााधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।

सतो बन्धमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा॥

(घ) प्रजापते न त्वदेवतान्यन्यो विश्वा वातानि परिता बभूव।

यत कामास्ते जुहुमतन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥

खण्ड—ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं ***पाँच*** पर टिप्पणियाँ कीजिए : 5×6=30

(क) वैदिक देवताओं का स्वरूप

(ख) पदों का चतुर्विध विभाग

(ग) षड्भाव विकार

(घ) निरुक्त का प्रयोजन

(ङ) निपातों के विभाग

(च) निघण्टु

(छ) रामायणकालीन सभ्यता

4. निम्नलिखित सूत्रों में से किन्हीं **दो** की व्याख्या कीजिए : 2×5=10

(क) प्राणभृज्जाति वयोवचनोद् गात्रादिभ्योऽच्

(ख) पातौ च बहुलम्

(ग) वा छन्दसि

(घ) तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्

(ङ) दीर्घादटि समानपदे

(च) होत्राभ्यश्चः